कृष्ण कांत हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के छठे दीक्षांत समारोह में कुलाधिपति एवं माननीय राज्यपाल के अभिभाषण का प्रारूप

दिनांक 5 मार्च 2024, मंगलवार	**समय : 11.00 AM**	**स्थान : खानापाड़ा, गुवाहाटी**

- कृष्णकांत हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रोफेसर राजेन्द्र प्रसाद दास जी,**
- दीक्षांत समारोह की मुख्य अतिथि केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हरियाणा की प्रो-वाइस चांसलर और यूजीसी की पूर्व सदस्य तथा बीपीएस महिलाविश्वविद्यालय, हरियाणा की पूर्व कुलपति **प्रोफेसर सुषमा यादव जी,**
- विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड और अकादमिक परिषद के सम्माननीय सदस्यगण,
- रजिस्ट्रार, डीन, स्कूलों के निदेशक, संकाय सदस्य तथा अधिकारी एवं कर्मचारीगण।
- समस्त ग्रेजुएट्स, आमंत्रित अतिथिगण, मीडिया के प्रतिनिधिगण,
- देवियो और सज्जनो

नमस्कार!

मुझे यहां कृष्ण कांत हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के छठे दीक्षांत समारोह में आप सभी को सम्बोधित करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। आप सभी जानते हैं कि दीक्षांत समारोह प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन का एक बहुत ही खास अवसर होता है। यह आपकी बरसों की कड़ी मेहनत और समर्पण से अर्जित उपलब्धि का प्रतीक है।

दूरस्थ और मुक्त शिक्षा प्रणाली के मामले में तो यह और भी अधिक मायने रखता है, क्योंकि आपमें से कई लोगों को उच्च शिक्षा में अपनी बहुप्रतीक्षित डिग्री हासिल करने के लिए अनेक प्रकार की बाधाओं को पार करना पड़ता है। बहुतों को तो जीवन में अपने सपनों को पूरा करने का पर्याप्त अवसर भी नहीं मिल पाता। आप उन भाग्यशाली लोगों में से हैं, जिनको अवसर मिला और शिक्षा अर्जित करने का संकल्प भी साकार हुआ। इसलिए, आज आपके लिए खुशी का दिन है और मैं आप सभी स्नातक विद्यार्थियों, डिग्री, डिप्लोमा और पदक प्राप्त करने वाले प्रतिभाशाली शिक्षार्थियों को आपकी उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

समारोह में उपस्थित विद्यार्थियों के परिवार के सदस्यों और शुभचिंतकों के साथ-साथ मैं उन शिक्षकों को भी बधाई देता हूँ, जिन्होंने आपकी सफलता के लिए कड़ी मेहनत की है तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से आपका मार्गदर्शन कर सहायता की है।

मैं इस अवसर पर असम राज्य में उच्च शिक्षा के क्षितिज को विस्तार देने की दिशा में किये जा रहे योगदान के लिए के.के. हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की सराहना करता हूँ। असम सरकार राज्य के भौतिक और आर्थिक विकास के अनुरूप उच्च शिक्षा में निरंतर सकल नामांकन अनुपात बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात को वर्तमान दर लगभग 28 प्रतिशत से बढ़ाकर वर्ष 2035 तक 50 प्रतिशत करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। निःस्संदेह, यह कार्य कठिन है, लेकिन असंभव नहीं है। इसके लिए उच्च स्तर पर सरकार से लेकर शैक्षिक संस्थानों और निचले स्तर पर सभी लोगों की दृढ़ प्रतिबद्धता की आवश्यकता होगी।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि के.के. हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय इस दिशा में लगातार प्रयास कर रहा है। मुझे इस बात का भी संतोष है कि यह विश्वविद्यालय अकेला राज्य में उच्च शिक्षा में कुल नामांकन के लगभग 11 प्रतिशत का योगदान दे रहा है।

देवियो और सज्जनो

मुझे यह जानकर बेहद खुशी हुई कि राज्य के मुख्यमंत्री ने विश्वविद्यालय के रानी कैंपस के निर्माण के लिए 20 करोड़ रुपये दिये हैं। विश्वविद्यालय नामांकन बढ़ाने और नये कौशल आधारित और व्यावसायिक कार्यक्रम शुरू करने के लिए अनेक सराहनीय कदम उठा रहा है।

मुझे बताया गया है कि पिछले दो वर्षों के दौरान इस विश्वविद्यालय में नामांकन लगभग तीन गुना बढ़ गया है। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह विश्वविद्यालय अब शिक्षा की दृष्टि से गरीबों और वंचितों की बेहतर सेवा करने के लिए स्वयं को तैयार करने में सक्षम होगा।

कृष्ण कांत हैंडिक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर पूर्व भारत का एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय है, जो अपने ध्येय वाक्य 'बाधाओं से परे शिक्षा' के उद्देश्य के साथ भारत के 14वें मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में वर्ष 2006 में स्थापित किया गया। यह सुखद है कि विश्वविद्यालय नवीनतम शैक्षिक और तकनीकी प्रगति को समाहित करते हुए सभी संभावित शिक्षार्थियों को सहजता से गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा सुलभ कराने और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय परम्पराओं से जुड़े रहकर युवाओं द्वारा 21वीं सदी की चुनौतियों के अनुरूप विश्व-स्तरीय दक्षता प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। हमारे देश की परम्पराएं अत्यंत समृद्ध हैं और उन्हें बचाए रखने में यहां की महान विभूतियों के संघर्षों और प्रयासों का अमूल्य योगदान रहा है।

जैसा कि आप जानते हैं बीसवीं सदी के श्रेष्ठ भारतीय विद्वानों में से एक कृष्णकांत हांडिक विश्व प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान थे जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर असम का नाम रोशन किया।

शिक्षाविद् और ज्ञान के एक मूक साधक श्री हैंडिक द्वारा असम में शिक्षा के प्रसार और योगदान को सदैव याद किया जाएगा। आज से कई दशक पहले उन्होंने असम के वंचितों एवं पिछड़ों के लिए शिक्षा का बीड़ा उठाया था। समानता और सामाजिक समरसता के उनके आदर्शों पर चलकर ही आज के युवा संवेदनशीलता के साथ सबके हित के बारे में सोच सकते हैं और श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

मित्रो,

एनईपी 2020 ने अनेक विशिष्टओं को रेखांकित करते हुए देश में उच्च शिक्षा परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण नवाचारों में शामिल किया है। एनईपी की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह शिक्षाशास्त्र, गुणवत्ता, मूल्यांकन और नीति निर्धारण संस्थानों, यहां तक कि विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता के स्वाभाविक विकास में बाधा के रूप में उपस्थित सीमाओं को दूर करने से संबंधित है। इसमें यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि विद्यार्थी चाहे विश्वविद्यालय के नियमित छात्र के रूप में डिग्री प्राप्त करें या ओपन और डिस्टेंस मोड से या ऑनलाइन मोड से, किसी के प्रति कोई भेदभाव नहीं होगा।

यह बहुत ही स्वागत योग्य कदम है और मेरा मानना है कि यह उन सभी छात्रों को पर्याप्त अवसर प्रदान करेगा जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

एनईपी 2020 इस महत्वपूर्ण पहलू पर भी जोर देती है कि शैक्षणिक लचीलेपन को मान्यता दी जाये। इसके अनुरूप शिक्षार्थी अब अपनी सुविधा के अनुसार किसी भी शैक्षणिक कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं और जब उनको आवश्यकता हो तब छोड़ सकते हैं और फिर जब आवश्यक लगे तो बिना कोई शैक्षणिक वर्ष खोए पुनः शामिल हो सकते हैं।

मुझे लगता है कि यह सुविधा बेहतर साबित होगी और इससे शिक्षार्थियों को समुचित स्वतंत्रता और लचीलापन मिलेगा। एनईपी में तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पाठ्यक्रम के डिजाइन से लेकर वितरण तक और सामग्री की तैयारी से लेकर मूल्यांकन तक शिक्षा के सभी पहलुओं में नवाचारों की व्यापक संभावना है। यह प्रौद्योगिकी के विचारशील समावेशन और सीखने को शिक्षार्थियों की क्षमता और आवश्यकता के अनुरूप बनाने पर जोर देती है।

शिक्षा नीति के ये सभी बदलाव स्वाभाविक रूप से चुनौतियाँ पैदा करने वाले हैं, जिनसे संस्थानों को निपटना होगा। इन चुनौतियों में सबसे महत्वपूर्ण है शिक्षा की मात्रा और गुणवत्ता के बीच संतुलन बनाये रखना। स्पष्ट है कि आने वाले दिनों में शैक्षिक संस्थानों को एक-दूसरे के साथ तीव्र प्रतिस्पर्धा का सामना करना होना और अंततः वही अस्तित्व में रहेंगे जिनके पास गुणवत्ता होगी। इसलिए हमें अपने प्रयासों को शिक्षा की गुणवत्ता और उत्कृष्टता दोनों ही स्तरों पर केन्द्रित करना होगा।

देवियो और सज्जनो

अभी तक हमारे पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपरा के बारे में बहुत कम जानकारी को शामिल किया गया है। एनईपी में इसका आग्रह किया गया है कि हमारे पाठ्यक्रम को इस तरह से पुनर्गठित किया जाए कि हमारे बच्चों को यहां की परंपरा, संस्कृति और विरासत पर गर्व महसूस करने का अवसर मिले। यह हम सभी के समक्ष एक महत्वपूर्ण चुनौती है, विशेषकर खुले और दूरस्थ शिक्षार्थियों के लिए, जिन्हें उनके अदृश्य शिक्षकों द्वारा शिक्षित और प्रशिक्षित किया जाना है।

हम सभी को शिक्षार्थियों द्वारा समाज और लोगों की बेहतर और व्यापक समझ के लिए इन विषयों पर पर्याप्त गुणवत्ता वाली शिक्षण सामग्री तैयार करने और उचित शैक्षिक पाठ्यक्रमों को डिजाइन करने, विकसित करने और वितरित करने के लिए अपना पूरा प्रयास करना चाहिए।

औपचारिक डिग्री प्राप्त कर लेना शिक्षा का अंत नहीं है। हमें जीवनभर जिज्ञासु बनकर सीखते रहना चाहिए। आज जब टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन हो रहा है तब निरंतर सीखते रहना और भी आवश्यक हो गया है। आप सब युवा टैक्नोलॉजी का प्रयोग करना जानते हैं और करते भी हैं।

यह सही है कि किसी भी साधन का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों संभव हैं। इसी प्रकार टैक्नोलॉजी का भी सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों हो सकते हैं। अगर हम इसका सदुपयोग करेंगे तो देश और समाज का भला होगा और अगर दुरुपयोग करेंगे तो मानवता का नुकसान होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य भारतीय मूल्यों से युक्त एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का विकास करना भी है, जो सभी को उच्च गुणवत्ता-युक्त शिक्षा उपलब्ध करवाकर भारत को एक 'वैश्विक ज्ञान शक्ति' के रूप में स्थापित करे। मुझे प्रसन्नता है कि यह विश्वविद्यालय अपने सभी पाठ्यक्रमों में नई शिक्षा नीति को लागू कर रहा है। इसके लिए मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी पदाधिकारियों को साधुवाद देता हूँ।

प्रिय शिक्षार्थियों

दीक्षांत समारोह मुख्य रूप से आपके और आपकी उपलब्धियों के बारे में है। यह उत्सव के साथ-साथ समाज में सार्थक योगदान देने के लिए तत्पर रहने का भी अवसर है। मैं एक बार फिर आप सभी को सफलतापूर्वक अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद आज औपचारिक रूप से स्नातक होने पर बधाई देता हूं।

याद रखें कि इसने आपको ज्ञान के पथ पर आगे बढ़ते रहने और समग्र रूप से राष्ट्र की प्रगति में निस्वार्थ योगदान देने की सबसे चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है।

मैं आपसे अपने भविष्य के लक्ष्यों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने, विचारों के प्रति दृढ़ रहने और जीवन के प्रति अपने दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध होने का आग्रह करता हूं। अपने आसपास के लोगों के जीवन में उल्लेखनीय बदलाव लाने के लिए अर्जित ज्ञान का उपयोग करने का प्रयास करें।

आज का दिन आपके जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मुझे विश्वास है कि विश्वविद्यालय से अर्जित ज्ञान के आधार पर आप सफलता की नई ऊंचाइयों को छुएंगे। इस अवसर पर मैं आप लोगों को तीन परामर्श देना चाहूंगा।

पहला, आप अपनी जड़ों से जुड़े रहें चाहे वे आपके दोस्त-परिजन हों या स्कूल-कॉलेज।

दूसरा, अपने नैतिक मूल्यों जैसे सच्चाई, ईमानदारी और निष्पक्षता से कभी समझौता न करें।

तीसरा, आपने जो शिक्षा प्राप्त की है इसमें समाज का भी अहम योगदान है इसलिए आप विकास यात्रा में पीछे छूट गये लोगों की मदद करें।

यहां मैं महान कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा लिखी चंद पंक्तियों का उल्लेख करना चाहूंगा-

साहस, दृढ़ संकल्प, शक्ति, श्रम

नवयुग जीवन का रच उपक्रम,

नव आशा से नव आस्था से

नये भविष्यत स्वप्न संजोवें।

अंत में, मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप सभी सर्वशक्तिमान ईशवर से आशीर्वाद प्राप्त कर अपने व्यावसायिक और व्यक्तिगत जीवन में बड़ी सफलता हासिल करें तथा राज्य और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर आगे ले जाने में सहायक बनें।

धन्यवाद!

जय हिन्द!

जय भारत!